इकाई 3 बुधचार

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 बुधचार का परिचय

3.2.1 बुध का स्वरूप

3.2.2 बुध के उदय का फल

3.3 विविध नक्षत्रगत बुध का फल

3.3.1 अश्विन्यादि नक्षत्रगत बुध का फल

3.3.2 हस्तादि नक्षत्रगत बुध का फल

3.3.3 श्रवण आदि नक्षत्रगत बुध का फल

3.4 नक्षत्रगत बुध की सात गतियां

3.4.1 प्राकृतादि गतियों का लक्षण

3.4.2 योगान्तिकदि गतियों का लक्षण

3.5 मासवश बुध के उदय और अस्त का फल

3.6 बुध के बिम्ब का लक्षण और फल

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 सन्दर्भ ग्रंथ

3.10 बोध प्रश्न

3.0 उद्देश्य

बुधचार नामक इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप:

- बुधचार का परिचय दे सकेंगे
- बुध के उदय फल का उल्लेख कर सकेंगे
- अश्विन्यादि नक्षत्रगत बुध का फल समझा सकेंगे
- नक्षत्रगत बुध की सात गतियों का परिचय दे सकेंगे
- बुध के बिंब का लक्षण और फल समझा सकेंगे

3.1 प्रस्तावना

प्रिय अध्येता ! बुधचार नामक इस इकाई में स्वागत है ।इसके पूर्व की इकाई में आप चंद्र चार का अध्ययन कर चुके होंगे । इस इकाई में बुधचार से संबंधित सभी विषयों का उपास्थापन कर

सकेंगे। ज्योतिष शास्त्र में बुध ग्रह को बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रह माना गया है। बुध पृथ्वी का दूसरा सबसे निकटतम ग्रह है, क्योंकि पृथ्वी के बाद चंद्र ग्रह का क्रम आता है तत्पश्चात बुध ग्रह का क्रम आता है इस प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि बुध ग्रह, पृथ्वी तथा चंद्रमा का निकटतम ग्रह होने के कारण चंद्र सदृश लक्षण बहुत ही व्याप्त होते हैं। इस इकाई में आप बुधचार का परिचय बुध का स्वरूप, बुध के उदय का फल, विविध नक्षत्रगत बुध का फल जैसे अश्विनी आदि नक्षत्रगत बुध का फल, हस्त आदि नक्षत्रगत बुध का फल, श्रवण आदि नक्षत्रगत बुध का फल, नक्षत्रगत बुध की सात गतियों का विवेचन, प्राकृतादि गतियों का लक्षण, योगान्तिकादि गतियों का लक्षण, मास वश बुध के उदय और अस्त का फल, बुध के बिंब का लक्षण और फल इन सभी विषयों का आप अध्ययन करेंगे।

बुध ग्रह का चार सभी नक्षत्रों, राशियों तथा मासों पर होता है जिसका लक्षण और फल आप इसी इकाई में जानेंगे। बुध ग्रह का बिंब तथा उसका फल भी इस इकाई में जानेंगे। बृहत्संहिता तथा वशिष्ठ संहिता के बुधचार नामक अध्याय में इसका विस्तृत विवेचन किया गया है। अतः आप इस इकाई में भली-भांति जानने अध्ययन करेगें।

3.2 बुधचार का परिचय

संहिता शास्त्र के आचार्यों ने बुधचार के विषय में बहुत ही स्पष्टता से वर्णित किये हैं। बुध ग्रह को कुमार ग्रह कहते है। जैसे राजा का पुत्र जीवन व्यतीत करता है उसी प्रकार बुध के प्रभाव वाले लोग राजकुमार सदृश जीवन यापन करते है। बुध के बारे में कहा गया है कि विधो: पुत्रे वित्ते प्रवरमतिरज्ञोऽपि कृतिनां अर्थात् बुध यदि द्वितीय भाव में स्थित हो तो मनुष्य मूर्ख होते हुए भी बुद्धिमान होता है उसी प्रकार आगे भी कहा गया है कि तृतीये यस्य ज्ञे प्रसरति वणिक् वृत्तिरभितः अर्थात् बुध यदि तृतीय भाव में हो तो उसके व्यापार की चतुर्दिक वृद्धि होती है। बुधचार वश पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की घटनाएं उत्पन्न होती है तथा उसके चार के कारण मनुष्यों पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है। कुण्डली चक्र में बुध जहाँ भी स्थित होता है वहाँ उस स्थान को शुभ करता है लिखा भी है कि बुधे धर्मस्थानं गतवति सुधर्मा बुधवरो अर्थात् बुध यदि नवम भाव में हो तो वह विद्वान्, धर्मात्मा , भक्त ,यज्ञकर्ता ,सज्जनों को संग करने वाला, राजा से अधिक प्रतापी, दुर्जनों को सन्ताप देने वाला तथा पूर्ण रूपेण धनवान होता है। ज्योतिष शास्त्र में बुध को एक शुभ ग्रह माना जाता है। परन्तु किसी अशुभ या क्रूर ग्रह के संगत से यह अशुभ भी हो सकता है। बुध, मिथुन एवं कन्या राशियों का स्वामी है तथा कन्या राशि में उच्च भाव में स्थित रहता है तथा मीन राशि में नीच भाव में रहता है। यह सूर्य और शुक्र के साथ मित्र भाव से तथा चंद्रमा से शत्रुतापूर्ण और अन्य ग्रहों के प्रति तटस्थ रहता है। यह ग्रह बुद्धि, बुद्धिवर्ग, संचार, विश्लेषण, चेतना (विशेष रूप से त्वचा), विज्ञान, गणित, व्यापार, शिक्षा और अनुसंधान का प्रतिनिधित्व करता है।

बृहत्संहिता ग्रंथ के ग्रह भक्ति योगाध्याय में बुध के प्रदेश और उनके व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है।अर्थात् बुधचार वश कौन- कौन से प्रदेश और कौन व्यक्ति प्रभावित होते हैं इससे उसका ज्ञान हो जाता है।इस विषय में आचार्य लिखते हैं कि- लोहित्य और सिन्धु नद, सरयू, गाम्भीरिका, रथाख्या, गङ्गा, कौशिक, विपाशा, सरस्वती और चन्द्रभागा नदी, मथुरा के पूर्वार्ध भाग, हिमालय पर्वत, गोमन्त पर्वत और चित्रकूट पर्वत के प्रान्त में स्थित मनुष्य, सौराष्ट्र देश स्थित मनुष्य, सेतु (पुल) के आश्रय में रहने वाले, जलमार्ग के आश्रय में रहने वाले, पण्यवृत्ती, बिल में निवास करने वाले, पर्वत पर रहने वाले, कूप, तड़ाग आदि, यन्त्र को जानने

वाले, गान विद्या जानने वाले, लेखक, मणि के लक्षण को जानने वाले, रंगरेज, सुगन्धि द्रव्य बनाने वाले, चित्रकार, वैयाकरण, ज्यौतिषी, आयुष्य (रसायन, वाजी करण आदि को जानने वाले), शिल्पी, गुप्तचर, कुहक (प्रसेन आदि के दर्शन से जीवनयात्रा चलाने वाले), बालक, कवि, शठ (परोपकार से विमुख), चुगल खोर, अभिचार (वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण आदि को जानने वाले), दूत, नपुंसक, हँसी उड़ाने वाले, भूत-प्रेत के तन्त्र को जानने वाले, इन्द्रजाल को जानने वाले, रक्षक, नाचने वाले, तेल, बीज, रसायन शास्त्र को जानने वाले इन सभी का स्वामी बुध है। अब आप बुध का स्वरूप जानेंगे। विविध शास्त्रों में बुध का स्वरूप क्या क्या वर्णित किया गया है तथा पौराणिक दृष्टि से बुध का क्या स्वरूप है इसके बारे में आप जानेंगे।

3.2.1 बुध का स्वरूप

बुध ग्रह को अनेक नामों से जानते हैं जैसे बुध, शशि, तारापुत्र, चंद्रज, राजा सोमपुत्र गिया बोधन बुध कुमार सौम्य रोहिणी राजपुत्र इत्यादि नामों से जानते हैं। पौराणिक मान्यता अनुसार चन्द्रमा के गुरु थे देवगुरु बृहस्पति । बृहस्पति की पत्नी तारा चंद्रमा की सुंदरता पर मोहित होकर उनसे प्रेम करने लगी, तदोपरान्त बृहस्पति को छोड़ दिया। बृहस्पति के वापस बुलाने पर उसने वापस आने से मना कर दिया, जिससे बृहस्पति क्रोधित हो उठे तब बृहस्पति एवं उनके शिष्य चंद्र के बीच युद्ध आरंभ हो गया। इस युद्ध में असुर गुरु शुक्राचार्य चंद्रमा की ओर हो गये और अन्य देवता बृहस्पति के साथ हो लिये। अब युद्ध बड़े स्तर पर होने लगा। क्योंकि यह युद्ध तारा की कामना से हुआ था, अतः यह तारकाम्यम कहलाया। इस वृहत स्तरीय युद्ध से सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा को भय हुआ कि ये कहीं पूरी सृष्टि को ही लील न कर जाए, तो वे बीच बचाव कर इस युद्ध को रुकवाने का प्रयोजन करने लगे। उन्होंने तारा को समझा कर चंद्र से वापस लिया और बृहस्पति को सौंपा। इस बीच तारा के एक सुंदर पुत्र जन्मा जो बुध कहलाया। चंद्र और बृहस्पति दोनों ही इसे अपना बताने लगे और स्वयं को इसका पिता बताने लगे यद्यपि तारा चुप ही रही। माता की चुप्पी से अशांत व क्रोधित होकर स्वयं बुध ने माता से सत्य बताने को कहा। तब तारा ने बुध का पिता चंद्र को बताया। चंद्र ने बालक बुध को रोहिणी और कृत्तिका नक्षत्र-रूपी अपनी पत्नियों को सौंपा। इनके लालन पालन में बुध बड़ा होने लगा। बड़े होने पर बुध को अपने जन्म की कथा सुनकर शर्म व ग्लानि होने लगी। उसने अपने जन्म के पापों से मुक्ति पाने के लिये हिमालय में श्रवणवन पर्वत पर जाकर तपस्या आरंभ की। इस तप से प्रसन्न होकर विष्णु भगवान ने उसे दर्शन दिये। उसे वरदान स्वरूप वैदिक विद्याएं एवं सभी कलाएं प्रदान की। इस प्रकार बुध को सभी विद्याओं एवं कलाओं का स्वामी कहा जाता है। ताजिक नीलकंठी ग्रंथ में बुध का स्वरूप बताया गया है कहा गया है कि बुध ग्रामीण, सौम्य ग्रह ,नीला रंग, सुवर्ण धातु का स्वामी ,वृत्ताकार, बाल्यावस्था , ईटों से ऊंची भूमिका, चारी, सम धातु, जीव, वात पित्त कफ तीनों बराबर , जीव रक्षा करने वाला ,श्मशान वासी, उत्तर दिशा का स्वामी, प्रातः काल बली, शूद्र वर्ण, पक्षी जाति ,कटु, सर्व रस प्रधान रजोगुण है। मत्स्य पुराण के अनुसार बुध कनेर के पुष्प के अनुसार कान्ति वाला ,पीत रंग के पुष्प व वस्त्र धारण करने वाला, तथा मनोहर रूप वाला है | नारद पुराण के अनुसार बुध त्रिदोष युक्त,हास्य प्रिय,एवम,अनेकार्थ शब्दों का प्रयोग करने वाला होता है।

बुध ग्रह को बुद्धि का देवता माना जाता है। कुंडली में इसकी स्थिति काफी अधिक महत्व रखती है। यदि बुध अच्छी स्थिति में हो तो व्यक्ति को बुद्धि संबंधी कार्यों में विशेष सफलताएं प्राप्त होती हैं। जबकि ये अशुभ स्थिति में हो तो कई प्रकार की मानसिक परेशानियों का सामना

करना पड़ता है। बुध एक ऐसा ग्रह है जो सूर्य के सानिध्य में ही रहता है। जब कोई ग्रह सूर्य के साथ होता है तो उसे अस्त माना जाता है। यदि बुध भी 13 डिग्री या उससे कम में सूर्य के साथ हो, तो उसे अस्त माना जाता है। लेकिन सूर्य के साथ रहने पर बुध ग्रह को अस्त का दोष नहीं लगता और अस्त होने से परिणामों में भी बहुत अधिक अंतर नहीं देखा गया है। बुध ग्रह कालपुरुष की कुंडली में तृतीय और छठे भाव का प्रतिनिधित्व करता है। बुध की कुशलता को निखारने के लिए की गयी कोशिश, छठे भाव द्वारा दिखाई देती है। जब-जब बुध का संबंध शुक्र, चंद्रमा और दशम भाव से बनता है और लग्न से दशम भाव का संबंध हो, तो व्यक्ति कला-कौशल को अपने जीवन-यापन का साधन बनाता है। जब-जब तृतीय भाव से बुध, चंद्रमा, शुक्र का संबंध बनता है तो व्यक्ति गायन क्षेत्र में कुशल होता है। अगर यह संबंध दशम और लग्न से भी बने तो इस कला को अपने जीवन का साधन बनाता है। इसी तरह यदि बुध का संबंध शनि केतु से बने और दशम लग्न प्रभावित करे, तो तकनीकी की तरफ व्यक्ति की रुचि बनती है। कितना ऊपर जाता है या कितनी उच्च शिक्षा ग्रहण करता है, इस क्षेत्र में, यह पंचम भाव और दशमेश की स्थिति पर निर्भर करता है। पंचम भाव से शिक्षा का स्तर और दशम भाव और दशमेश से कार्य का स्तर पता लगता है। बुध लेख की कुशलता को भी दर्शाता है। यदि बुध पंचम भाव से संबंधित हो, और यह संबंध लग्नेश, तृतीयेश और दशमेश से बनता है, तो संचार माध्यम से जीविकोपार्जन को दर्शाता है और पत्रकारिता को भी दर्शाता है। और बृहस्पति की दृष्टि या स्थान परिवर्तन द्वारा संबंध बन रहा हो, तो इंसान को वाणिज्य के कार्यों में कुशलता मिलती है। इस प्रकार अलग-अलग ग्रहों और भावों व भावों के स्वामी से संबंध होने से जीवकोपार्जन का क्षेत्र बताता है। यद्यपि इस प्रकार के बहुत से क्षेत्र हैं, लेकिन उन पर बुध ग्रह का प्रभाव अवश्य देखने को मिलता है।

ग्रह भक्तियोगाध्याय में बुध के प्रदेश और व्यक्ति बताया गया है जो इस प्रकार है- लोहित्य और सिन्धु नद, सरयू, गाम्मीरिका, रथाख्या, गङ्गा, कौशिकी, विपाशा, सरस्वती और चन्द्रभागा नदी, मधुरा के पूर्वार्ध भाग, हिमालय पर्वत, गोमन्त पर्वत और चित्रकूट पर्वत के प्रान्त में स्थित मनुष्य, सौराष्ट्र देश स्थित मनुष्य, सेतु (पुल) के आश्रय में रहने वाले, जलमार्ग के आश्रय में रहने वाले, बिल में निवास करने वाले, पर्वत पर रहने वाले, वापी, वृष, तड़ाग आदि, यन्त्र को जानने वाले, गान विद्या जानने वाले, लेखक, मणि के लक्षण को जानने वाले, रंगरेज, सुगन्धि द्रव्य बनाने वाले, चित्रकार, वैयाकरण, ज्यौतिषी, आयुष्य (रसायन, आदि को जानने वाले), शिल्पी, गुप्तचर, कुहक (पक्षि आदि के दर्शन से जीवनयात्रा चलाने वाले), बालक, कवि, शठ (परोपकार से विमुख), चुगल खोर अभिचार (वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण आदि को जानने वाले), दूत, नपुंसक, हँसी उड़ाने वाले, भूत-प्रेत के तन्त्र को जानने वाले इन्द्रजाल को जानने वाले, रक्षक, नाचने वाले, घृत, तेल, स्नेह (तिल अक्षोट आदि), बीज, तित (नीम), व्रती (ब्रह्मचारी आदि), इन सब का स्वामी बुध है। अब बुध के समस्त गुणों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

गृह राशि	-	कन्या, मिथुन
उच्च राशि	-	कन्या
नीच राशि	-	मीन
मूलत्रिकोण	-	कन्या
मित्र ग्रह	-	सूर्य और शुक्र

समग्रह	-	मंगल, गुरु ,शनि
शत्रु ग्रह	-	चंद्र
अवस्था	-	कुमार
वर्ण	-	हरित
उदय प्रकार	-	शीर्षोदयी
आकृति विशेष	-	पक्षी
जाति	-	शूद्र
लिंग	-	नपुंसक
वास संस्थान	-	कीड़ा स्थान
शरीर में धातु विशेष	-	त्वचा
रस	-	मिश्र रस
गुंण	-	रज
अधि देवता	-	विष्णु
प्रत्यधि देवता	-	विष्णु
प्रकृति	-	कफ ,वात, पित
ऋतु	-	शरद्
कारक भाव	-	4 ,10
दशा वार्ष	-	17 वर्ष
शाखा अधिपति	-	अथर्ववेद
तत्व	-	भूततत्व
स्वभाव	-	मिश्र
काल	-	ऋतु
वेद	-	अथर्व
लोक	-	नरक
मूलादि संज्ञा	-	मिश्रसंज्ञक
रत्न	-	पन्ना
धातु	-	मिश्रित द्रव्य
वस्त्र	-	आर्द्र
अवतार	-	बुद्ध
दृष्टि	-	कटाक्ष
वाहन	-	नर

जिसकी मध्यम गति सूर्य के ही समान है उसकी मध्यम गति 59/18 तथा उसका भगण सूर्य भगण के अनुसार ही है अर्थात् 432 00 0 0 है उसका शीघ्रोच्च भगण 179 370 60 और

एक कल्प में उसका मन्दोच्च भगण 368 है। इस प्रकार से वह एक राशि को एक मास के तुल्य अपना भगण पुरा कर लेता है। उसकी कक्षा पृथ्वी से 16 4945 योजन दूरी स्थित है इसके विषय में कमलाकर लिख चुके हैं। बुध का कक्षा प्रमाण 4331 500 योजन है। शीघ्र केंद्र कक्षा प्रमाण 104 320 9 सूर्य सिद्धांत के अनुसार उसका बिंब प्रमाण 45 योजन 3 कलात्मक है।

आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार बुध ग्रह सूर्य से पास का ग्रह है और द्रव्यमान में आठवां सबसे बड़ा ग्रह है और गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी के अपेक्षा एक चौथाई है यह सौर मंडल का सबसे छोटा ग्रह है जिसके पास कोई उपग्रह नहीं है और बुध ग्रह का व्यास 880 किलोमीटर है। बुध को सामान्यतः नंगी आंखों से सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से ठीक पहले देखा जा सकता है बुध सूर्य के काफी समीप होने के कारण दिखना मुश्किल होता है बुध 48 किलोमीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से यह आठ आठ दिनों में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है जो सबसे कम समय है। बुध की सतह पर तापमान 9 डिग्री से 700 डिग्री तक जाता है।

3.2.2 बुध के उदय का फल

यदि कोई ग्रह अपनी कक्षा में भ्रमण करते हुए सूर्य के अति सन्निकट आ जाता है तो वह अस्त अथवा लुप्त हो जाता है और वही ग्रह यदि सूर्य से दूर निकलता है तो उसका उदय होता है। प्राचीन आचार्यों ने ग्रहों के अस्त संबंधी कलांश निर्धारित किए हैं, उसमें बुध का कलांश 13 अंश निर्धारित किया गया है अर्थात् बुध,यदि सूर्य के राशि में 13 अंश के मध्य में रहेगा तो अस्त हो जाता है, परंतु यदि उसका अन्तर 13 अंश से अधिक होता है तो उदय को प्राप्त होता है इसी को उदय काल कहते हैं

वैसे तो बुध को शुभ ग्रह किस श्रेणी में रखते हैं परंतु बुध का उदय पृथ्वी के किसी भी भाग में अच्छा नहीं माना जाता है जब भी उसका उदय होता है उस समय उत्पात होता ही है अब यहां पर उत्पात का व्यापक अर्थ है अग्नि का भय जल का भय वायु का भय महंगाई यह सब उत्पात की श्रेणी में आते हैं बुध के उदय के फल के बारे में संहिता के आचार्यों ने बहुत ही स्पष्ट रूप वर्णन किये है यहां पर बृहत्संहिता के प्रमाणिक श्लोकों के माध्यम से आपके समक्ष बुध का उदय फल लिखा जा रहा है। ऐसे तो संहिता शास्त्र में अनेकों ग्रंथ हैं परंतु प्रमाणिक ग्रंथ के रूप में बृहत्संहिता, वशिष्ठसंहिता आदि को रखा जाता। इन्हीं प्रामाणिक ग्रंथों के माध्यम से बुधचार का वर्णन किया जाएगा।

"नोत्पातपरित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।
जलदहनपवनभयकृद् धान्यर्घक्षयविवृद्धौ वा॥

शब्दार्थ- चन्द्रजः= चन्द्र का पुत्र बुध, उत्पातपरित्यक्त = उत्पातविरहित , न व्रजति = न जाना दहनः= अग्नि पवनः= वायु ,भयकृत् = भय करना ,धान्यस्य = अन्न का ,अर्धक्षयः= मूल्यह्रास ,विवृद्धि = मूल्यबृद्धि

अर्थात् उत्पात रहित होकर किसी समय में भी बुध का उदय नहीं होता इसका तात्पर्य यह है कि जब भी बुध का उदय होता है उस समय किसी ना किसी प्रकार का उत्पात अवश्य होता है जैसे जल, अग्नि, वायु का भय होता है तथा अनाज की बहुत महंगाई हो जाती है अथवा अनाज बहुत सस्ता भी हो जाता है और समाज में विपत्ति भी होने लगती है विपत्ति का यहां तात्पर्य है कि रोग कष्ट इत्यादि होने लगते हैं।

यहां पर आप पांच प्रकार के उत्पातों को जाना जलकृद्भय , अग्निकृद्भय, वायुकृद्भय , धान्यार्घक्षय धान्यार्घवृद्धि

जलकृद्भय- जल से उत्पन्न भय जलकृद् भय कहलाता है। जल जनित उत्पात अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे वृष्टि संबंधी उत्पात अतिवृष्टि संबंधी उत्पात अनावृष्टि संबंधी उत्पात कूप जल की विकृति नदी जल की विकृति और तालाब जल की विकृति।

अग्निकृद्भय- अग्नि से उत्पन्न भय को अग्नि कृत् भय कहते हैं। इसमें वनों की अग्नि ,गांवों की अग्नि से उत्पन्न भय होता है।

वायुकृद्भय- हवा से उत्पन्न भय को वायु कृत् भय कहते हैं इसमें चक्रवात, आंधी, तूफान, भूकंप इत्यादि का भय उत्पन्न होता है।

धान्यार्घक्षय- अन्न इत्यादि मूल्यों में अतीव न्यूनता होने के कारण धान्यार्क्षय भय होता है । इसमें व्यापारियों तथा किसानों की हानि होती है।

धान्यार्घवृद्धि- अन्न इत्यादि मूल्यों में अतीव वृद्धि होने के कारण धान्यार्घवृद्धि का भय होता है । इसमें गरीब तथा भूमिहीन किसानों की हानि होती है।

3.3 विविध नक्षत्रगत बुध का फल

प्रिय अध्येता ! अब आप विविध नक्षत्रगत बुध का फल जानेंगे। पूर्व में जिस प्रकार सूर्य का नक्षत्रगत फल आपने जाना है उसी प्रकार बुधचार में नक्षत्रगत फलों को जानेंगे। अश्विनी आदि से रेवती पर्यंत क्या क्या फल होता है ? इस विषय में संहिता शास्त्र में बहुत ही स्पष्ट रूप से लिखा है जो आगे आप जानेंगे।

3.3.1 अश्विन्यादि नक्षत्रगत बुध का फल

इसमें आप बुधचार वस आप अश्वनी, शतभिष, मूल, रेवती, पूर्वा फाल्गुनी ,पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, नक्षत्र में बुध का क्या क्या फल हो सकता है आप जानेंगे।

आश्विनवारुणमूलन्युपमृद्नन् रेवतीं च चन्द्रसुतः ।
पण्यभिषग्नौजीविकसलिलजतुरगोपघातकरः

शब्दार्थ- चन्द्रसुतः = चन्द्र का पुत्र बुध, आश्विनम् = अश्विनी नक्षत्र, वारुणम् = शतभिषा नक्षत्र, मूलम् = मूलनक्षत्र, रेवतीम् = रेवति नक्षत्र ,उपमृदनन् = भेदन कर , पण्यजीविकानाम् = वणिक्प्रभृति (व्यवसायिक व्यक्ति), भिषजाम् = वैद्य, नौजीविकानाम् = नाविक जन, सलिलजानाम् = जल से उत्पन्न द्रव्यों से जीवन यापन करने वाले, तुरगाणाम् = अश्वों का (घोड़ों का), उपघातकर:= नाश करने वाले ।

यदि बुध अश्विनी, शतभिषा, मूल या रेवती नक्षत्र पर चार करे अर्थात् भेदन करे तो व्यापारी, वैद्य, नौका से जीविका करने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा घोड़ों का नाश करता है।

पूर्वादृक्षत्रितयादेकमपीन्दोः सुतोऽभिमृद्नीयात् ।
क्षुच्छस्त्रतस्करामयभयप्रदायी चरन् जगतः

इन्दोः सुतः = चन्द्र का पुत्र बुध, पूर्वाद्यक्षत्रितयम = पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वा षाढा, पूर्वा भाद्रपद् नक्षत्र में, जगत:= संसार, क्षुद्रम् = दुर्भिक्ष , तस्कराः = चोर आमयः= रोग, प्रदायी = प्रदान करना।

यदि बुध पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वापाढा या पूर्वाभाद्रपदा को भेद कर विचरण करे तो सुधा, शस्त्र, चोर और रोगों का भय देने वाला होता है।

3.3.2 हस्तादि नक्षत्रगत बुध का फल

इसमें आप हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, जेष्ठा ,उत्तराफाल्गुनी, कृतिका, उत्तराभाद्रपद, भरणी नक्षत्र में बुधचार का क्या क्या फल हो सकता है इस विषय में संहिता के आचार्य लिखते हैं कि -

हस्तादीनि चरन् षडर्शाण्युपीड्यन् गवामशुभः ।
स्नेहरसार्धाविवृद्धिं करोति चोर्वीं प्रभूतान्नाम् ॥

आर्यम्णं हौतभुजं भद्रपदामुत्तरां यमेशं च।
चन्द्रस्य सुतो निघ्नन् प्राणभृतां धातुसंक्षयकृत् ॥

शब्दार्थ- हस्तादीनि = हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा ज्येष्ठा नक्षत्र, षड् ऋक्षाणि = छः संख्या तक नक्षत्र ,चरन् = विचरण करना , उपपीड्यन् = नक्षत्रों का भेदन करना , गवाम् = गाये, अशुम् = घातक ,स्नेहानाम् = तैल घृत से, रसानाम् = मधुर ,अम्ल,कूट,लवण,तिक्त ,कषाय छःरस, अर्धविवृद्धिम् = मूल्यवृद्धि करना , उर्वीमा= पृथ्वी, प्रभूतान्नां करोति = पर्याप्त मात्रा में अन्न करना, आर्यम्णम् = उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ,हौतभुजम् = कृत्तिका नक्षत्र ,उत्तराभद्रपदाम् = उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र यमेशं = भरणी नक्षत्र, चन्द्रस्य सुतः= बुध, निघ्नन् = मारना, प्राणभृताम् = मनुष्यों का , धातूनां = वसा-रक्त-मांस-मेदा-अस्थि- मज्जा- शुक्रादि सात धातुएं, संक्षयकृत् = विनाश करना।

हस्त से छः (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा) नक्षत्रों के योग तारा का भेद करते हुये बुध विचरण करे तो गायों को अशुभ करता है। स्नेह (तेल, घृत आदि), रस (मधुर आदि) के मूल्य में वृद्धि करता है और भूमि को अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण करता है।

इसी प्रकार उत्तरा फाल्गुनी, कृत्तिका, उत्तरा भाद्रपदा या भरणी नक्षत्र को बुध भेद करता हो तो प्राणियों के धातुओं (वसा, रक्त, मांस, मेधा, अस्थि ,मज्जा और शुक्र) का नाश करता है।

3.3.3 श्रवण आदि नक्षत्रगत बुध का फल

इसमें आप श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिर , उत्तराषाढ़ा आर्द्रा से मघा तक के पाँच नक्षत्रों में बुध के चार वश क्या क्या फल हो सकता है इस विषय में जानेगें। संहिता के आचार्य लिखते हैं कि

विचरन् श्रवणधनिष्ठाप्राजापत्येन्दुवैश्वदेवानि ।
मृद्नन् हिमकरतनयः करोत्यवृष्टिं सरोगभयाम् ॥
रौद्रादीनि मघान्तान्युपाश्रिते चन्द्रजे प्रजापीडा।
शस्त्रनिपातक्षुद्भयरोगानावृष्टिसन्तापैः।।

शब्दार्थ- श्रवणम् = श्रवण नक्षत्र, धनिष्ठा = धनिष्ठा नक्षत्र, प्राजापत्यम् = रोहिणी नक्षत्र, इन्दुः = मृगशिरा नक्षत्र ,वैश्वदेवानि = उत्तराषाढ़ा नक्षत्र , हिमकरतनयः = चन्द्र का पुत्र बुध ग्रह, मृदनन् = भेदन पूर्वक, विचरन् = चलना, सरोगभयाम् = रोगभय युक्त, अवृष्टिम् = वर्षा का अभाव, रोद्रादीनि = आर्द्रा नक्षत्र, पुनर्वसु नक्षत्र, पुष्य नक्षत्र, आश्लेषा नक्षत्र, मघान्तानि = मघा नक्षत्र पर्यन्त , चन्द्रजे = बुध ग्रह, उपाश्रिते = व्यवस्थित, शस्त्रनिपातेन = युद्ध क्षेत्र ,क्षुब्द्रयेन = दुर्भिक्ष भय, रोगैः = रोग से ,अनावृष्ट्या = वर्षा का अभाव, सन्तापेन = दुख से ,प्रजापीड़ा = प्रजा को दुःख देना।

श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिर या उत्तराषाढ़ा को यदि भेद करते हुये बुध विचरण करे तो वर्षा का अभाव और रोग का भय करता है।

आर्द्रा से मघा तक के पाँच नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में बुध का सञ्चार हो तो शस्त्रनिपात (युद्ध), क्षुधा भय, रोग, अनावृष्टि और अनेक प्रकार के दुःख से प्रजाओं को पीडित करता है।

3.4 नक्षत्रगत बुध की सात गतियां

इसमें बुध के गतियों के बारे में जानेंगे। बुध की सात प्रकार की गतियां होती हैं ।प्राकृत , मिश्रित, संक्षिप्त, तीक्ष्ण, योगान्तिक, घोर और पाप गतियां हैं जो विविध नक्षत्रगत होने पर होती हैं, जिनका लक्षण और फल आप जानेंगे इस विषय में आचार्य लिखते हैं कि-

प्राकृतविमिश्रसंक्षिप्ततीक्ष्णयोगान्तघोरपापाख्याः।
सप्त पराशरतन्त्रे नक्षत्रैः कीर्त्तिता गतयः ||

शब्दार्थ- प्राकृताः = प्राकृतगति, विमिश्राः = विमिश्रगति, संक्षिप्ता = संक्षिप्तगति, तीक्ष्णा = तीक्ष्णगति, योगान्तिका = योगान्तिकगति, घोरा = घोरगति, सप्तगतयः = सप्तसंख्यक गति, कीर्तिताः = कहा गया।

प्राकृत, विमिश्र, संक्षिप्त, तीक्ष्ण, योगान्तिक, घोर ,पाप ये पराशरतन्त्रोक्त नक्षत्रों के साथ बुध की सात गतियाँ हैं।

3.4.1 प्राकृतादि गतियों का लक्षण

इसमें आप बुध की प्राकृतिक गति, मिश्र गति, संक्षिप्त गति ,और तीक्ष्ण गति के लक्षण के बारे में जानेगें, इसमें संहिता के आचार्य लिखते हैं कि-

प्राकृतसंज्ञा वायव्ययाम्यपैतामहानि बहुलाश्च।
मिश्रा गतिः प्रविष्टा शशिशिवपितृभुजगदेवानि ।।

संक्षिप्तायां पुष्यः पुनर्वसुः फल्गुनीद्वयं चेति।
तीक्ष्णायां भद्रपदाद्वयं सशाक्राश्वयुक् पौष्ण् ।।

शब्दार्थ- वायव्यम् = स्वाती नक्षत्र ,याम्यम् = भरणी नक्षत्र , पैतामहम् = रोहिणी नक्षत्र, प्राकृतसंज्ञा = प्राकृतसंज्ञा गति, शशिदेवः = मृगशिर नक्षत्र, शिवदेवः = आर्द्रा नक्षत्र, पितृदेवः = मघा नक्षत्र, भुजंगदेवः = आश्लेषा नक्षत्र, मिश्रा गतिः = मिश्राख्य गति, प्रदिष्टा = कहा गया, पुष्यः = पुष्य नक्षत्र, पुनर्वसुः = पुनर्वसु नक्षत्र, फल्गुनीद्वयं च = पूर्वाफल्गुनी उत्तराफल्गुनी नक्षत्र

,भद्रपदाद्वयम् = पूर्वाभद्रपदा उत्तराभाद्रा नक्षत्र द्वय, सशाक्रम = ज्येष्ठा नक्षत्र सहित , अश्वयुक् = अश्विनीनक्षत्र, सह पौष्णम् = रेवती नक्षत्र के साथ,।

प्राकृत गति- बुध ग्रह यदि स्वाति, भरणी, रोहिणी ,कृतिका, नक्षत्रों के साथ संचरण करते हैं तो बुध की प्राकृत गति होती है।

मिश्रा गति- जिस समय बुध मृगशिरा ,आर्द्रा, आश्लेषा, नक्षत्र में विचरण करते हैं तो उस समय मिश्रा गति होती है।

संक्षिप्त गति- बुध यदि पुष्य, पुनर्वसु, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी ,नक्षत्र में संचरण करते हैं तो संक्षिप्त गति होती है।

तीक्ष्णा गति- बुध यदि अपनी कक्षा में भ्रमण करते हुए पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, जेष्ठा, अश्वनी, रेवती, नक्षत्र में विचरण करते हैं तो तीक्ष्ण गति होती।

3.4.2 योगान्तिकादि गतियों का लक्षण

इसमें आप युगांतर गति, घोर गति, और पाप गति के बारे में जानेंगे। इसमें संहिता के आचार्य लिखते हैं कि-

योगान्तिकेति मूलं द्वे चाषाढे गतिः सुतस्येन्दोः ।
घोरा श्रवणस्त्वाष्ट्रं वसुदैवं वारुणं चैव ।।
पापाख्या सावित्रं मैत्रं शक्राग्निदैवतं चेति ।

शब्दार्थ- इन्दोः सुतस्य = चन्द्र का पुत्र बुधस्य , मूलम् = मूल नक्षत्र, द्वे आषाढ़े = पूर्वाषाढा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र द्वय, योगान्तिका गतिः = योगान्तिका नामक गति, श्रवणम् = श्रवण नक्षत्र ,त्वाष्ट्रम् = चित्रा नक्षत्र, वसुदैवम् = धनिष्ठा नक्षत्र, वारुणम् = शतभिष नक्षत्र, घोरा = घोरा नामक गति, सावित्रम् = हस्त नक्षत्र, मैत्रम् = अनुराधा नक्षत्र, शक्राग्निदैवतम् = विशाखा नक्षत्र, पापाख्या = पाप नामक गति।

योगान्तिकागति- बुध यदि मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों में संचरण करता है तो उसको योगान्तिक नामक गति कहते है।

घोरागति – यदि बुध श्रवण ,चित्र, धनिष्ठा, शतभिष नक्षत्रों में संचरण करे तो घोर नामक गति होती है।

पापगति - बुध यदि हस्त, अनुराधा, विशाखा नक्षत्रों में संचरण करे तो पाप संज्ञक गति होती है। इस प्रकार से बुध की सात प्रकार की गतियां होती हैं।

इस प्रकार विभिन्न नक्षत्रों के साथ बुध की सात गतियों का लक्षण हैं। सूर्य से 13 अंश के अन्तर पर बुध होता है तो अस्त हो जाता है और 13 अंश से अधिक दूरी होने पर उदय को प्राप्त होता है। इस तरह यदि बुध स्वाति ,भरणी ,नक्षत्र, रोहिणी और कृतिका नक्षत्र में होता है तो उसकी प्राकृतिक गति होती है इस प्राकृतिक गति में अगर बुध का उदय होगा तो 40 दिन तक उदित रहता है और अस्त होता है तो 40 दिन तक अस्त रहता है। इसी प्रकार से जो उपर्युक्त मिश्र गति मृगशिरा ,आर्द्रा, आश्लेषा, नक्षत्र में विचरण करते हैं तो उस समय उसमें अगर अस्त रहेगा तो 30 दिन तक अस्त और उदित रहेगा तो 30 दिन तक उदित, पुष्य,

पुनर्वसु, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी ,नक्षत्र में संचरण करते हैं तो संक्षिप्त गति होती है संक्षिप्त गति में उदित होगा तो 22 दिन तक उदित, अस्त होगा तो 22 दिन तक अस्त, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, जेष्ठा, अश्वनी, रेवती, नक्षत्र में विचरण करते हैं तो तीक्ष्ण गति होती, तीक्ष्ण गति में उदित होगा तो 18 दिन तक उदित रहता है और अस्त होगा तो 18 दिन तक अस्त रहेगा। उसी प्रकार मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों में संचरण करता है तो उसको योगान्तिक नामक गति होती है योग गति में 9 दिन उदित रहेगा और 9 दिन तक ही अस्त होता है। श्रवण ,चित्रा, धनिष्ठा, शतभिष नक्षत्रों में संचरण करे तो घोर नामक गति होती है घोर गति में 15 दिन उदित रहेगा और 15 दिन तक ही अस्त रहेगा। हस्त, अनुराधा, विशाखा नक्षत्रों में संचरण करे तो पाप संज्ञक गति होती है पाप गति में बुध 9 दिन उदित रहता है और 9 दिन तक ही अस्त रहता है।

नक्षत्रगत बुध की जो सात गतियां बताई गई हैं इन गतियों का लक्षण आपने जाना अब आप इन सात गतियों का फल जानेगें अर्थात् इन सात गतिओं का विवेचन संगीत शास्त्र में बहुत ही स्पष्ट रूप में किया है।

प्राकृतगत्यामारोग्यवृष्टिसस्यप्रवृद्धयः क्षेमम्।
संक्षिप्तमिश्रयोर्मिश्रमेतदन्यासु विपरीतम्॥

शब्दार्थ- प्राकृतगत्याम् = प्राकृतिक गति ,आरोग्यम् = निरोग, वृष्टिः = वर्षा ,सस्यप्रवृद्धयः = अन्नों की वृद्धि ,क्षेमम् = शुभ, संक्षिप्तमिश्रयोः = संक्षिप्त मिश्र दो गतियाँ, मिश्रम् = पूर्वोक्त मिश्र गति, विपरीतम् = विपरीत फल।

प्राकृत गति में स्थित बुध आरोग्य, वर्षा, धान्य की वृद्धि और क्षेम करता है। संक्षिप्ता गति में स्थित बुध मिश्रित फल (मध्यम फल अर्थात् साधारण आरोग्य, साधारण वर्षा, साधारण धान्य की वृद्धि और साधारण क्षेम) देता है। और शेष (तीक्ष्णा, योगान्तिका, घोरा और पापा) गति में विपरीत फल अर्थात् (अनारोग्य, अवर्षा, धान्य का नाश और अक्षेम) करता है।

3.5 मासवश बुध के उदय और अस्त का फल

प्रिय अध्येता ! अब आप मास वश बुध के उदय और अस्त का फल जानेंगे। बुध किन-किन मासों में उदय को प्राप्त होता है तो क्या क्या फल प्रदान करता है तथा बुध किन-किन मासों में अस्त होता है तो क्या-क्या फल प्रदान करता है इसका अध्ययन करेंगे। इसका विवेचन संहीता शास्त्र में किया गया है।

पौषाषाढ श्रावणवैशाखेष्विन्दुजः समाधेषु।
दृष्टो भयाय जगतः शुभफलकृत्प्रोषितस्तेषु॥
कार्तिकेऽश्वयुजि वा यदि मासे दृश्यते तनुभवः शिशिरांशो।

शस्त्रचौरहुतभुग्गदतोयक्षुद्भयानि च तदा विदधाति॥

शब्दार्थ- पौषाषाढ श्रावणवैशाखेषु = पौष -आषाढ - श्रावण- वैशाख- मासों में। समाधेषु = माघ मास सहित ,इन्दुजः = बुध, दृष्टः = उदित, जगतः = संसार, भयाय = भय, तेषु = पूर्वोक्त पौष ,आषाढ , श्रावण, वैशाख मासों में , प्रोषितः = अस्त गत, शुभफलकृत = शुभफल करना, शिशिरांशोः = चन्द्र, तनुभवः = शरीर से उत्पन्न ,कार्तिके = कार्तिक मास में, अश्वयुजि

मासे वा = आश्विन मास मे, दृश्यते = उदय को प्राप्त करना , तदा शस्त्रभयम् = युद्ध काल में शस्त्रभय चौरभयम् = तस्करों का भय, हुतभुग्भयम् = अग्नि का भय, गदभयम् = रोग का भय , तोयभयम् = जल का भय, क्षुद्भयं = दुर्भिक्ष का भय, विदधाति = करता है।

यदि बुध का उदय पौष मास, आषाढ़ मास, श्रावण मास, और माघ मास में होता है तो संसार में भय होता है और यदि बुध का अस्त पौष मास, आषाढ़ मास, श्रावण मास, और माघ मास में होता है तो शुभ फल प्रदान करता है। और यदि बुध का उदय कार्तिक मास ,आश्विन मास में होता है तो शस्त्र भय, चोर का भय ,अग्नि का भय, रोग का भय, जल का भय और अकाल का भय होता है।

3.6 बुध के बिम्ब का लक्षण और फल

इसमें आप बुध के बिंब का लक्षण और फल जानेंगे। बुध जब आकाश में दिखाई देता है तो उसका स्वरूप अर्थात् वर्ण कैसा होता है क्या क्या फल प्रदान करता है इस विषय में आप जानेगें।

हेमक्रान्तिरथवा शुक्रवर्णः सस्यकेन मणिना सदृशो वा।
स्निग्धमूर्तिरलघुश्च हिताय व्यत्यये न शुभकृच्छशिपुत्रः ॥

शब्दार्थ- हेमकान्तिः = सोने के समान कान्ति बाला , शुकवर्णः = तोता पक्षी के समान वर्ण वाला ,सस्यकेन मणिना = नील मणि के सदृश , सदृशः = तुल्य, शशिपुत्रः =बुध, स्निग्धमूर्तिः =निर्मल शरीर,अलघुश्च = लम्बा बिम्ब ,हित्याय = कल्याण करना , व्यत्यये = विपरीत अवस्था नें, न शुभकृत्= शुभकर नही।

अर्थात् सोने के समान कान्ति बाला, तोता पक्षी के समान वर्ण वाला, धान्य अथवा नील मणि के सदृश और निर्मल तथा विस्तीर्ण बुध का विम्ब दिखाई दे तो संसार के हित के लिये होता है। इसके विपरीत वर्ण का दिखाई दे तो अशुभ फल करने वाला होता है।

3.7 सारांश

प्रिय अधयेता ! बुध ग्रह का चार यदि नक्षत्रों पर होता है तो क्या-क्या फल प्रदान करता है तथा बुध का चार किन-किन मासों पर होता है तो क्या क्या फल प्रदान करता है इन सभी विषयों का अध्ययन आप ने किया। ग्रहों में बुध बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रह है बुध के बारे में कहा गया है कि बुध जिस ग्रह के साथ रहता है उसी ग्रह के स्वभाव में परिवर्तित हो जाता है अर्थात् बुध ग्रह युति शुभ ग्रह के साथ अगर हो जाती है तो उसमें और शुभत्व हो जाता है, परंतु यदि बुध ग्रह की युति पाप ग्रह के साथ हो जाती है तो बुध का स्वभाव पाप फल प्रदान करने वाला होता है। इससे हम देखते हैं कि बुध का तो अपना स्वभाव है और दूसरा ग्रह युति से है। हमने बुध ग्रह की सात गतियों के बारे में जाना जो नक्षत्र वशाद् उत्पन्न होता है। विभिन्न नक्षत्रों के साथ बुध का उदय विभिन्न गतियां को उत्पन्न करता है।

बुध के बिंब का लक्षण के बारे में कहा गया है कि बुध का बिंब यदि सुंदर दिखाई दे अर्थात् मणि सदृश्य ,तोते के रंग के सदृश दिखाई दे तो संसार में अथवा जिस भाग पर बुध का उदय होता है उस भाग पर रहने वाले मनुष्यों के लिए शुभकारी होता है। अगर इसके विपरीत बिंब

दिखाई दे तो उस क्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों के लिए अशुभकारी होता है ।इस प्रकार से बुधचार के अंतर्गत सभी विषयों का समावेश इस इकाई में किया गया है।

3.8 शब्दावली

दुर्भिक्ष	=	अकाल पढ़ना ।
इंदु सुत	=	बुध
गद	=	रोग
प्रजा पीड़ा	=	लोगों को कष्ट
तोयभय	=	जल भय
गद भय	=	रोग भय

3.9 सन्दर्भ ग्रंथ

बृहत्संहिता- श्री अच्युतानन्द झा -चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

वशिष्ठ संहिता - डॉ गिरिजा शंकर शास्त्री- चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी

ज्योतिष सिद्धान्तमञ्जूषा - डॉ. विनय कुमार पाण्डेय- चौखम्बा सुभारती प्रकाशन वारानासी

प्राच्यविद्या परिशीलन - डॉ. मीनाक्षी मिश्रा- नैसर्गिक शोध संस्था वारानासी

कृषि-पराशर- प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय मोतीलाल बनारसी दास

गोलपरिभाषा - डॉ निगम पाण्डेय - चौखम्बा संस्कृत भवन वारानासी

3.10 बोधप्रश्न

1. बुधचार का परिचय लिखिए।
2. बुध के उदय फल का उल्लेख कीजिए।
3. अश्वन्यादि नक्षत्रगत बुध का फल लिखिए।
4. नक्षत्रगत बुध की गतियों का लक्षण और फल लिखिए।
5. बुध के बिंब का लक्षण और फल लिखिए।
6. मासवश बुध का फल लिखिए।